आदरणीय श्री कृष्ण कुमार बेदी जी, माननीय कैबिनेट मंत्री, हरियाणा सरकार, मंचासीन संत-महात्मा गण, महर्षि वाल्मीकि आश्रम एवं वाल्मीकि सभा के पदाधिकारीगण, मातृशक्ति, युवा साथियो तथा उपस्थित सभी भक्त जन !

आप सभी ko भगवान वाल्मीकि प्रगट दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

धर्मनगरी Kurukshetra की इस पावन भूमि पर महर्षि वाल्मीकि जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना और उनके विचारों से प्रेरणा ग्रहण करना

हम सभी के लिए गौरव का विषय है। इस गरिमामय आयोजन के लिए मैं महर्षि वाल्मीकि आश्रम एवं वाल्मीकि सभा के सभी पदाधिकारियों और आयोजकों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

महर्षि वाल्मीकि भारतीय साहित्य, संस्कृति और मानवीय चेतना के महान प्रतीक हैं। उन्हें आदिकवि और उनकी अमर रचना रामायण को आदिकाव्य के रूप में सम्मान प्राप्त है। रामायण केवल एक महाकाव्य नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों, कर्तव्यबोध, त्याग, मर्यादा और Human Emotions की अनुपम Kriti है।

महर्षि वाल्मीकि के जीवन से जुड़ा Kronch Pakshi का प्रसंग हमें करुणा और Emotion के महत्व का बोध कराता है। यह प्रसंग बताता है कि महान साहित्य का जन्म केवल ज्ञान और प्रतिभा से नहीं, Balki संवेदनशील हृदय से भी होता है। दूसरों के दुःख को अनुभव करना और अन्याय के प्रति संवेदनशील रहना ही मानवता का वास्तविक आधार है।

भाईयों और बहनो, महर्षि वाल्मीकि की रामायण हमें सिखाती है कि जीवन में कर्तव्य, सत्य, त्याग और मर्यादा का विशेष महत्त्व है।

भगवान श्रीराम का कर्तव्यबोध, भरत का त्याग, लक्ष्मण की निष्ठा, सीता का धैर्य और हनुमान का सेवाभाव हमें अपने जीवन में उच्च आदर्श अपनाने की प्रेरणा देते हैं।

रामायण की Importance यह है कि वह केवल अपने समय की कथा नहीं है, बल्कि हर युग के मनुष्य को आत्ममंथन का अवसर प्रदान करती है। आज भी हम अपने पारिवारिक, सामाजिक और सार्वजनिक जीवन में इन मूल्यों से प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। महर्षि वाल्मीकि का Smaran हमें सामाजिक समरसता, समानता और

मानवीय गरिमा के प्रति अपनी Commitment को मजबूत करने का अवसर देता है। हमारा संविधान भी न्याय, स्वतंत्रता, समानता और Brotherhood के आदर्शों पर आधारित है। हमारा दायित्व है कि इन मूल्यों को केवल पुस्तकों और भाषणों तक सीमित न रखें, बल्कि अपने व्यवहार में उतारें।

महर्षि वाल्मीकि की साहित्यिक विरासत हमें यह भी सिखाती है कि भारत की सांस्कृतिक विविधता हमारी शक्ति है। विभिन्न भाषाओं और परंपराओं में रामकथा की लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है कि

महान साहित्य Generations and communities को Jodne की Capacity रखता है। हमें अपनी विरासत का संरक्षण करते हुए परस्पर सम्मान, सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना चाहिए।

अंत में, मैं महर्षि वाल्मीकि आश्रम एवं वाल्मीकि सभा, थानेसर के सभी आयोजकों को इस प्रेरणादायी आयोजन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आप सभी को भगवान वाल्मीकि प्रगट दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

जय हिंद! जय हरियाणा!